बच्चों के पढ़ने–लिखने की प्रक्रियाएं

– एक दस्तावेज –

(मार्च 2004)

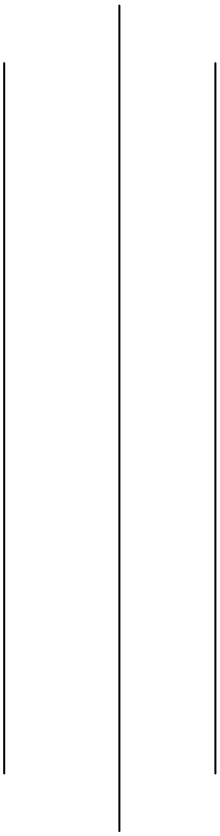

नालंदा

सेक्टर – बी, B-1/84

अलीगंज, लखनऊ – 226 024

बच्चों के पढ़ने–लिखने की प्रक्रियाएं

प्रस्तावना

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के पढ़ना–लिखना सिखाने को बहुत ही संकुचित अर्थ में देखा जाता है। इसके अंतर्गत शिक्षक का पूरा जोर बच्चे को 'ग्राफोफोनिक्स' पर पूरा अधिकार दिलाना होता है। कक्षा में बच्चों को पढ़ना सिखाने के दौरान शिक्षक के लिए पढ़ने के सेमेंटिक संकेत कोई महत्व नहीं रखते और बच्चे विद्यालय की शुरूआती कक्षाओं में अपना काफी समय वर्णमाला, मात्राओं, को दोहराने–रटाने व शुद्धता से लिखने में बिता देते हैं। प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के पढ़ना–लिखना सिखाने के दृष्टिकोण को प्रो० कृष्ण कुमार अपने लेख 'प्रारंभिक शिक्षा और पढ़ने का कौशल' में इस प्रकार उदृधत करते हैं –

'प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने के 'परंपरागत' दृष्टिकोण का ही उपयोग किया जाता है। इस दृष्टिकोण की विशेषता यह होती है कि वह लिखी हुई ईबारत को 'जानकारियों' का पुलिंदा मान कर चलता है, जिन्हें उन्हीं की खातिर सीखना होता है। बच्चों को विभिन्न अक्षरों के नाम सीखने होते हैं और उन्हें उन अक्षरों को अलग–अलग करके और किसी शब्द के हिस्से के रूप में पहचानने की योग्यता विकसित करनी होती है। अक्षरों की यह 'जानकारी' भरोसेमंद हो जाने के बाद ही बच्चों को किसी अर्थपूर्ण वाक्य पर लागू कर दिया जाता है। इस तरह बच्चों के पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया में ढेर सारा मशीनी काम शामिल होता है। जिससे बच्चे को तुरंत लाभ या संतोष नहीं मिलता। इस दृष्टिकोण में पढ़ने को अंतिम परिणाम के रूप में दिया जाता है। जिसके लिए उसे काफी इंतजार करना पड़ता है। इसके लिए उसे लिखित सामग्री में अर्थ तलाशने, विशेषकर उस अर्थ को तलाशने की इच्छा को ताक पर रखना होता है। जिससे वह संबंध जोड़ सकता है।'

इस प्रकार प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के पढ़ना–लिखना सिखाने के प्रति एक व्यवहारवादी नजरिया दिखाई पड़ता है। जिसमें सीखने को टुकड़ों–टुकड़ों में बांटकर देखा जाता है। प्राथमिक विद्यालयों के पढ़ना–लिखना सिखाने के इन तौर–तरीकों से यह परिणाम निकलता है कि अधिकतर बच्चे विद्यालय में पांच वर्ष का समय बिताने के उपरांत सीखने के बुनियादी कौशल हासिल नहीं कर पाते और प्राथमिक शाला की पढ़ाई छोड़ देते हैं। जो बच्चे आगे की पढ़ाई जारी भी रखते हैं उनमें से अधिकतर बच्चे पाठ्य सामग्री पढ़कर उसे समझ नहीं पाते।

पढ़ना–लिखना माने क्या?

पिछले बीस वर्षों से बच्चों के पढ़ना–लिखना सिखाने के तरीकों पर कई अनुसंधान हुए हैं। जो पढ़ने के परंपरागत तरीकों पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। इन अनुसंधानों से यह बात स्पष्ट होती है कि **बच्चों के पढ़ने की प्रक्रियाओं में संबंध जोड़ने व अर्थ तलाशने की इच्छाएं पढ़ने के केन्द्र में होती हैं।** इस अर्थ को तलाशने में पाठ्य का संदर्भ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। संक्षेप में पढ़ना–लिखाना सिखाने के दृष्टिकोण को निम्न परिभाषाओं द्वारा स्पष्ट होने का प्रयास किया जा सकता है –

- प्रोफेसर कृष्ण कुमार अपनी पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' में पढ़ने को **लिखे हुए शब्दों में अर्थ ढूंढ़ने की प्रक्रिया** के रूप में परिभाषित करते हैं।

- Centre for Language in Primary Eeducation, London द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'The Reading Book' (1991) में 'पढ़ने' को निम्नानुसार स्पष्ट किया है –

  'Reading is much more than the decoding black marks upon a page : It is quest for meaning and one which require reader to be an active participant'.

- फ्रैंक स्मिथ अपनी पुस्तक 'Reading for nonsense', (1978) Teachers college press, New York में पढ़ने के बारे में लिखते हैं –

'Language is learned but when the focus is not on to language but on the meaning being communicated'.

'I think there is one general answer to question of how children learn to read, and that is by making sense of written language'.

- IGNOU, New Delhi के कोर्स Certificate Course in Teaching English के अनुसार –

'When we read for meaning, we do not need to read every letter of every word, nor every word in each sentence because very often we guess, anticipate and predict as we need a text.'

'Writing is a creative process where one discovers oneself ……. It is process of reaching out for one's thought and discovering them. Writing is as such a process of meaning making.'

वर्तमान स्थिति

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के पढ़ना–लिखना सिखाने की मौजूदा परिस्थतियों को समझने के लिए निम्न बिन्दुओं पर गौर किया जा सकता है –

- बच्चों की शुरूआती कक्षाओं में शिक्षक का पूरा ध्यान बच्चों को वर्णमाला, वर्तनी, शुद्ध उच्चारण सिखाने पर ही जोर रहता है। जिससे बच्चे लिखित भाषा के औपचारिक और यांत्रिक पहलुओं पर महारत हासिल कर सकें। इसके अंतर्गत बच्चे शब्दों को पढ़ने और लिखने, अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाने और शब्दों को मिलाकर वाक्य बनाने के अभ्यास करते हैं। इस तरह के अभ्यास बच्चों के पढ़ना सीखने को अर्थहीन बना देते हैं और पढ़ने को उसके कार्यात्मक पहलुओं से काट देते हैं।
- प्राथमिक कक्षाओं की शुरूआती पाठ्य पुस्तकों पर गौर करने से पता चलता है कि पाठ्य पुस्तकों की अधिकांश पाठ्य सामग्री अर्थहीन होती है। उसमें से अधिकतर पाठ बच्चों को अक्षर मात्रा सिखाने, मूल्यांकन आदि पर ही जोर देते हैं। इसके अलावा शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण के दौरान केवल एक पाठ्य पुस्तक के अलावा कोई अन्य पूरक सामग्री का प्रयोग नहीं करते न ही बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के मौके मिलते हैं। जबकि पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में यह माना जाता है कि 'पढ़ना पढ़कर ही सीखा जाता है' और इसके लिए पाठ्य पुस्तकों के इतर बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के मौके देने की बात कही जाती है।
- बच्चों के लिखने के अभ्यासों में भी अक्षर व शब्द बनाने, सही वर्तनी लिखने के अभ्यास तक ही सीमित रहते हैं। इसके साथ ही प्राथमिक कक्षाओं में सुलेख व इमला लिखवाने के अभ्यास ही बार–बार करवाए जाते हैं। कहीं भी लिखने में बच्चों को खुद को व्यक्त करने, अर्थपूर्ण लिखने के अभ्यास नहीं करवाए जाते। जिसमें बच्चे अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को जोड़ सकें। जबकि लिखने के मुख्य उद्देश्यों में अपने अनुभवों व विचारों को व्यक्त करने की क्षमता हासिल करने की बात कही जाती है।

वैकल्पिक नजरिया

बच्चों के पढ़ना–लिखना सिखाने को अर्थपूर्ण बनाने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों के पढ़ने–लिखने को बच्चों के सार्थक अनुभवों से जोड़ा जाए। इसे निम्न दृष्टिकोण के तहत देखा जा सकता है –

- पढ़ना सीखने की विभिन्न प्रक्रियाओं पर अब तक के शोध से पता चला है कि पढ़ना न तो सिर्फ नीचे से ऊपर अथवा ऊपर से नीचे जाने की प्रक्रिया का नतीजा है, बल्कि पढ़ने में पारंगत होने के लिए इन दोनों तरीकों के मूलतत्व या पहलू मिलाकर अहम भूमिका निभाते हैं।
- पढ़ना सिर्फ शब्दों में दिए गए अर्थ को खोलने तक ही सीमित नहीं है। पढ़ने की प्रक्रिया में ग्राफोफोनिक्स के साथ सीमेंटिक तथा सिनटैक्टिक के संकेत शब्द भी शामिल होते हैं। पढ़ने वाला बच्चा पढ़ने के दौरान सक्रिय होकर अर्थ निर्मित करता चलता है। पढ़ना सीखने में आनंद और संप्रेषण दोनों शामिल हैं।

- बच्चा भाषा को सक्रिय तौर से अंदाजा लगाकर, व्यवहार में लाता हुआ सीखता है।
- यदि बच्चों को ऐसे माहौल में रहने का मौका मिले, जहां उनके इर्द–गिर्द किताबें हो तो वे लिखित भाषा के बारे में सक्रियता से अनुमान लगाकर सीखते हैं। उन्हें औपचारिक रूप से भाषा के सभी यांत्रिक पहलू सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती।
- बच्चे भाषा सीखना और उसका उपयोग एक साथ करते हैं। इस प्रकार पढ़ने के कार्यात्मक पहलू इसके औपचारिक पहलुओं जितने ही अहम होते हैं।
- जब भाषा स्वाभाविक, उद्देश्यपूर्ण, प्रासंगिक और किसी असल घटना का हिस्सा होती है तो उसे सीखना आसान होता है।
- We learn to read by reading stories, magazines, newspapers, signs etc.

  - *Ken Goodman 'what's whole in whole language?' (1986) Heinemann educational books, ports mouth, New Hampshire (USA)*

- Writing helps to reinforce, the close relationship between writing and thinking makes it a valuable part of any language course.

  - *Certificate Course in Teaching English, IGNOU, New Delhi*

नालंदा विद्यालय – संक्षिप्त परिचय

प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण व गुणात्मक शिक्षा के कुछ पहलुओं को ध्यान में रखकर नालंदा ने करीब दो वर्ष पूर्व लखनऊ से करीब 25 किमी दूर एक ग्रामीण इलाके में एक छोटे से अनौपचारिक विद्यालय की शुरूआत की। इस विद्यालय में उन बच्चों को प्राथमिकता दी गई जो विद्यालय बीच में ही छोड़ कर घर बैठ चुके थे या विभिन्न कारणों से विद्यालय ही नहीं जा पाए थे।

विद्यालय के शिक्षक व बच्चे

शुरूआत में इस विद्यालय में करीब 37 बच्चे थे जिनमें से अधिकांश विद्यालय छोड़ चुकी बालिकाएं थीं। वर्तमान में विद्यालय में 72 बच्चे और तीन शिक्षक हैं। विद्यालय में आने वाले बच्चों की उम्र (6-12) वर्ष के बीच है। विद्यालय के बच्चों को चार समूहों में बांटा गया है जिसमें पहले समूह में पूर्व प्राथमिक स्तर के 16 बच्चे हैं तथा कक्षा एक के स्तर के 18 बच्चे हैं। इन दोनों समूहों के बच्चे पढ़ने–लिखने की तैयारी कर रहे हैं। दूसरी कक्षा में 23 बच्चे तथा तीसरी कक्षा में 19 बच्चे हैं। दूसरी व तीसरी कक्षाओं के बच्चे पढ़ने व लिखने की गतिविधियों में स्वतंत्र रूप से भाग लेते हैं। विद्यालय के तीनों शिक्षक स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण हैं तथा नालंदा विद्यालय से शुरू से ही जुड़े रहे हैं तथा समय–समय पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते रहे हैं।

बच्चों की पृष्ठभूमि

विद्यालय में में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चे गरीब किसान परिवारों से आते हैं। ये परिवार खेती व दैनिक मजदूरी के कार्यों में संलग्न हैं। अधिकतर परिवारों में पुरुष व महिलाएं दोनों कामों पर जाते हैं। इस कारण परिवार के बच्चे घरेलू कार्यों – खाना बनाने, बर्तन मांजने, चारा काटने, अपने छोटे भाई–बहनों की देखभाल करने आदि कार्यों में संलग्न रहते हैं। इस कारण ये नियमित रूप से विद्यालय में आने में असमर्थ रहते हैं। इसका असर उनके पढ़ने–सीखने पर व्यापक रूप से पड़ता है। इसका अनुभव बच्चों के विद्यालय के दैनिक क्रियाकलापों में महसूस किया जा सकता है। इन बच्चों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को उनके द्वारा प्रतिदिन लिखी जाने वाली डायरियों से समझा जा सकता है। बच्चों की ये डायरियां उनके लिखना–सीखने व उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति को कक्षा में जगह भी प्रदान करती है।

आज सुबह उठा पड़िया और एक पड़वा को निकालकर अम्मा ने चारा गबड़ दिया हमने नाँद में डाल दिया और घर आया। बस लिखने लगा। मां ने कहा राजेश चारा डाल दो हमने चारा डाल दिया। किताब का काम लिखने लगा। उसके बाद डायरी को लिखा। और गोबर डालकर स्कूल की तैयारी की और स्कूल चल दिया। स्कूल गया तो बस्ता को रख दिया। प्रार्थना और राष्ट्रगान किया और दीदी जी ने कहा लाईन से अपने–अपने कक्षा में बैठो। मैं कक्षा में बैठ गया दीदी जी ने एक कहानी सुनाई। अपने बारे में भी लिखा और लंच हो गया हमने पटरी से गेंद और बैट खेला और लंच खत्म हो गया और कक्षा में बैठे थे।

राजेश कुमार कक्षा – 3,

'हम सुबह उठी तो झाडू लगाई और राख भरी। राख भरकर चौका दिया। हाथ पैर धोकर खाना खाया। खाना खाकर बाल खींची और कपड़े पहनी और बैग लिया स्कूल गई थी और स्कूल में हमने काम किया और घर लौटी तो हाथ–पैर धोकर खाना खाया। खाना खाकर नाँद उलची और खेत गई थी और खेत से घर लौटी तो घास काटी और भैंस को चारा दिया और हमने हाथ पैर धोकर खाना खाकर रात हो गई तो हमने अपने बिस्तर पर सो गई।'

– खुशबू कक्षा 2

बच्चों के पढ़ने–लिखने का कार्यक्रम – शिक्षण रणनीतियां

विद्यालय में काम करने के दौरान यह देखा गया कि विद्यालय में अधिकतर बच्चे विभिन्न राजकीय विद्यालयों की तीसरी/चौथी कक्षा उत्तीर्ण थे। उक्त कक्षाएं उत्तीर्ण होने के उपरांत भी वे यहां पहली व दूसरी कक्षाओं में पढ़ रहे थे। इसके साथ यह भी देखा गया कि उनके पढ़ने–लिखने का स्तर बहुत औसत दर्जे का था। इन कारणों से विगत सत्र से विद्यालय में बच्चों के पढ़ने–लिखने के कौशल में सुधार हेतु पढ़ने–लिखने के कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इस कार्यक्रम के तहत बच्चों के साथ पाठ्य पुस्तकों के इस्तेमाल के साथ–साथ प्रतिदिन एक पीरिएड बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने, सोच कर लिखने, पढ़े हुए व लिखे हुए पर चर्चा करने, पढ़ी हुई सामग्री पर बातचीत करने आदि क्रियाकलापों को पढ़ना–लिखना सिखाने को मुख्य हिस्सा बनाया गया। इसके लिए बच्चों के समूह के स्तर को देखते हुए यथोचित संदर्भयुक्त पाठ्य सामग्री को विभिन्न स्रोतों से एकत्रित किया गया तथा इन बच्चों के साथ इसका इस्तेमाल किया गया। इसी तरह लिखना सिखाने के अंतर्गत मात्राओं व व्याकरण पर बहुत अधिक जोर न देते हुए उनकी अभिव्यक्ति, विषयवस्तु पर जोर दिया गया। इसके लिए प्रतिदिन बच्चों को अपने आसपास के अनुभव लिखने, चित्रों के आधार पर लिखने, पढ़ी हुई पुस्तक पर लिखने, अधूरी कहानी पूरी करने, खुद कहानी बनाने आदि के अभ्यास शुरू किए गए।

संक्षेप में, अपनाई गई शिक्षण प्रक्रियाओं को निम्न बिन्दुओं में समायोजित किया जा सकता है –

कक्षा का लचीला ढांचा

बच्चों को स्वयं पढ़ने व स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए उपयुक्त मौके देने के लिए कक्षा में एक लचीला ढांचा अपनाया गया। इसके अंतर्गत प्रत्येक समूह की पाठ्यपुस्तकों के साथ शिक्षण से अलग एक घंटे का समय बच्चों के लिए पढ़ने व लिखने के लिए रखा गया। इसमें बच्चे अकेले, समूह में शिक्षकों के साथ मिलजुल कर पढ़ सकें और यह बात बहुत जरूरी थी कि शिक्षक प्रत्येक बच्चे के पढ़ने पर उपयुक्त ध्यान व समय दे पाएं।

पढ़कर सुनाना

विद्यालय में अपनाई गई शिक्षण विधियों में बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के अभ्यास के अलावा पूर्व प्राथमिक स्तर से ही चित्रात्मक पुस्तकें पढ़कर सुनाने, लयबद्ध कविता गाने, चित्रों पर बातचीत करने आदि की प्रक्रियाएं शुरू की गईं। जिससे बच्चों में शुरूआत से ही मुद्रित सामग्री के प्रति जागरूकता पैदा हो और बच्चों को लगे जो उन्हें पढ़कर सुनाया जा रहा है, उसे लिखा भी जाता है और उस लिखे हुए का अर्थ होता है।

पूरक सामग्री का प्रचुर मात्रा में उपयोग

बच्चों को पढ़ना सिखाने व पढ़ने में रुचि बनाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर बच्चों की पाठ्य पुस्तकों के अलावा विभिन्न किस्म की पूरक पाठ्य सामग्री का कक्षा में भरपूर उपयोग शुरू किया गया है। यह सामग्री विभिन्न स्रोतों से इकट्ठा की गई तथा इन्हें कम्प्यूटर पर बड़े अक्षरों में टाइप–फोटो कॉपी व पन्नी चढ़ाकर बच्चों के साथ कक्षा में इनका उपयोग शुरू किया गया।

किताबों का कोना

विद्यालय में प्रत्येक समूह के पठन स्तर को ध्यान में रखकर विभिन्न स्रोतों से पूरक पुस्तकों/सामग्री का चयन किया गया और इस सामग्री को प्रत्येक कक्षा में बच्चों को उपलब्ध कराया गया। इस सामग्री को बच्चे अपने स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए प्रयोग में ला सकते थे।

स्वतंत्र रूप से लिखने के मौके

बच्चों के लिखने का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि बच्चे अपने अनुभवों को व्यवस्थित कर व्यक्त कर पाएं। इसके लिए आवश्यक था कि कक्षा में बच्चों को स्वतंत्र रूप से लिखने के मौके प्रदान किए जाएं। इसके अंतर्गत बच्चों के आसपास के परिवेश, उनके उससे जुड़े अनुभवों पर लिखने के मौके प्रदान किए गए।

चित्रों के आधार पर लिखना

इसके अंतर्गत बच्चों को स्वतंत्र रूप से चित्रों के आधार पर लिखने के मौके प्रदान किए गए। इसके लिए कई संदर्भयुक्त चित्रों को चुनकर बच्चों के साथ इनके आधार पर लिखने के मौके दिए गए।

पढ़ी हुई सामग्री पर लिखना

इस गतिविधि के अंतर्गत बच्चे जो पूरक पाठ्य सामग्री/पुस्तकें पढ़ते, उसके बारे में लिखकर अपनी राय भी प्रकट करते। यह भी उनकी अभिव्यक्ति को उभारने का तरीका था।

दिए गए शब्दों के आधार पर कहानी बनाना

बच्चों को कुछ शब्द देकर कहानी बनाने के अभ्यास नियमित रूप से करवाए जाते।

अधूरी कहानी पूरी करना

इसके अंतर्गत बच्चों को अधूरी कहानियों को पूरा करने के अभ्यास समय–समय पर करवाए जाते।

वर्गपहेली का उपयोग

बच्चों के शब्द भंडार में बढ़ोत्तरी करने के लिए बच्चों के साथ वर्ग पहेली को पूरा करने के अभ्यास भी करवाए जाते।

बच्चों द्वारा डायरी लिखना

इसके अंतर्गत बच्चे प्रतिदिन अपनी डायरी लिखते और इस डायरी को कक्षा में पढ़कर सुनाने के क्रियाकलाप नियमित रूप से कक्षा में करवाए जाते।

बच्चों के पढ़ने की प्रक्रियाएं – कक्षा के अवलोकन

विद्यालय में बच्चों के पढ़ने के नियमित अवलोकनों के द्वारा उनकी पढ़ने की प्रक्रियाएं उजागर होती हैं। जिन्हें निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत समझने का प्रयास किया जा सकता है –

पढ़ने की प्रक्रिया में अपने पूर्व ज्ञान, अनुभवों का उपयोग

कक्षा के नियमित अवलोकनों के दौरान यह देखा गया कि बच्चे पढ़ने के दौरान अपने पूर्व ज्ञान व अनुभवों का उपयोग प्रचुर मात्रा में करते हैं। वे शब्दों को अक्षरशः/शब्दशः नहीं पढ़ते उदाहरण के लिए एक दिन कक्षा 3 में पढ़ने वाला सुग्रीव 'सूरज और चाँद ऊपर कैसे गए' नामक कहानी पढ़ रहा था। इस कहानी के पढ़ने के अंतर्गत कहानी में आए एक वाक्य 'वे भाग कर आसमान में पहुंचे' को उसने पढ़ा – वे भगवान के पास आसमान में पहुंचे। कहानी पढ़ने के उपरांत बातचीत करने पर उसने बताया कि सूरज और चंद्रमा आखिर में भगवान के पास पहुंच गए और वहीं रहने लगे। यहां पर यह बात स्पष्ट होती है कि बच्चे अपने पढ़ने में अपने पूर्व ज्ञान का इस्तेमाल करते हैं। यहां पर उसका यह पूर्वज्ञान था कि उसने अपने गांव/समुदाय में यह सुन रखा था कि भगवान आसमान में रहते हैं इसलिए उसने ऐसा प्रयोग किया। यहां पर कहा जा सकता है कि पढ़ने के दौरान अक्षरशः/शब्दशः शब्दों पर ध्यान देने की जरूरत नहीं पड़ती।

चित्रों के द्वारा शब्दों को पढ़ने का प्रयास

कक्षा के अवलोकनों के दौरान देखा गया कि कुछ बच्चे किसी शब्द को पढ़ने के लिए चित्रों के 'क्लू' को पकड़ते हैं। कक्षा 2 की रेखा 'चींटा मोची' नामक कहानी पढ़ रही थी। उस कहानी में आए शब्द 'गिंजाई' को पढ़ने में उसे दिक्कत आ रही थी। लेकिन कहानी में चित्र देखकर उसने तुरंत अनुमान लगाया – 'गिंजाई' और बोली, ''गिजईया, इतने पैर।'' आगे भी वह गिजाई के स्थान पर गिजईया शब्द का उच्चारण करती रही।

कक्षा 2 का वीरेन्द्र 'महागिरी' नामक चित्रात्मक पुस्तक पढ़ रहा था। उस कहानी में आए शब्द 'ध्वज' को पढ़ पाने में कठिनाई आ रही थी न ही वह उसका अर्थ समझ पा रहा था। अवलोकन के दौरान यह देखा गया कि जब उसने चित्र पर गौर किया को उसकी समझ में आ गया और उसने बातचीत के दौरान 'ध्वज' का अर्थ झंडा बताया।

कक्षा 1 में पढ़ने वाला बालि 'चूहा और बिल्ली' नामक पाठ्य सामग्री पढ़ रहा था। इस सामग्री में लिखे हुए के साथ चित्र भी बने हुए थे। यह पाठ्य सामग्री उसके लिए नई थी। उसने खुद ही कहा, ''यव पहिले नहीं पढ़े हन।'' पढ़ने के दौरान उसे 'बोतल' शब्द को पढ़ने में दिक्कत आ रही थी। वह उस पर अटक रहा था। लेकिन जब उसकी नजर चित्र पर गई तब उसने 'बोतल' शब्द पकड़ लिया और उसे आगे सही पढ़ने लगा।

अर्थ के लिए समान शब्दों/वाक्यों का इस्तेमाल करना

कक्षा के अवलोकनों के दौरान यह देखा गया कि बच्चे पढ़ते हुए विभिन्न शब्दों को अक्षरशः/शब्दशः पढ़ने का प्रयत्न नहीं करते। वे पढ़ने के दौरान पाठ्य के अर्थ पकड़ने के लिए समान शब्दों/वाक्यों का इस्तेमाल करते हैं। कक्षा 3 का मंगल प्रसाद 'तितली और चना' नामक कहानी पढ़ रहा था। कहानी के एक वाक्य – 'कुछ ही दिनों में यह अंकुर पौधा बन गया को उसने पढ़ा – 'कुछ ही दिनों में यह अंकुर बड़ा होकर पौधा बन गया।' इससे वाक्य के अर्थ पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

कक्षा 1 में पढ़ रही सोनी 'साइकिल बिट्टी' की नामक चित्रात्मक पुस्तक पढ़ रही थी। किताब में आए एक वाक्य – 'बिट्टी को खुश देख कर पिता जी मुस्कुरा उठे।' 'मुस्कुरा' उसे कठिन लगा तो उसने तुरंत वाक्य में आए उसके करीब के शब्द 'खुश' को ही जोड़ लिया और उसे पढ़ा – 'बिट्टी को देखकर पिता जी भी खुश हो उठे।' इस प्रकार उसने अपना काम चला लिया।

अर्थ को पकड़ने का स्वयं प्रयास करना

कक्षा में पढ़ने के अवलोकनों से यह बात स्पष्ट होती है कि बच्चे अपने पढ़े हुए का अर्थ समझना चाहते हैं। इसे कुछ अवलोकनों से समझा जा सकता है। कक्षा 2 का वीरेन्द्र 'पापा जल्दी आना' नामक पत्र पढ़ रहा था। जब उससे पढ़ने के उपरांत पूछा गया तो उसने पत्र में वर्णित 'खिलौनों' का जिक्र किया। फिर उसने कहा, ''यह कहानी थी।'' लेकिन फिर उसे एकाएक लगा कि कुछ गड़बड़ है। शायद ठीक से बात समझ में नहीं आई। उसने बिना डर के कहा कि एक बार फिर से पढ़ लूँ। इस बार पढ़ने पर उसको पूरी बात समझ में आ गई और उसने कहा कि यह एक चिट्ठी है, यह चिट्ठी कमला ने अपने पापा को लिखी है और उसने चिट्ठी में लिखी हुई बातों को भी बताया।

इसी तरह से एक दिन वह 'शेर साहब की पूंछ' नामक कहानी पढ़ रहा था। उसे यह कहानी भी पहली बार में समझ में नहीं आई और उस पर कुछ ज्यादा बता नहीं पाया। फिर उसने उसे दोबारा पढ़ा तब उसे पूरी बात समझ में आई। इससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चे अपने पढ़े हुए को समझना भी चाहते हैं और उसे समझने के लिए दुबारा भी पढ़ते हैं।

अपरिचित शब्दावली विशेष समस्या नहीं

बच्चों के पढ़ने पर यह गौर करने को मिला कि उनके पढ़ने के दौरान आने वाले अपरिचित शब्द उनके पढ़ने में बहुत बाधा उत्पन्न नहीं करते। वे अपने पढ़े हुए का मतलब आसानी से निकाल लेते हैं। अवलोकनों के दौरान कक्षा 3 का प्रदीप कुमार एक दिन 'गुठली' नामक कहानी पढ़ रहा था। इस कहानी में आए फल का नाम 'आलूबुखारा' को वह नहीं जानता था। लेकिन पूरी कहानी पढ़ने के उपरांत वह कहानी समझ गया। उसने बताया कि यह कोई खाने वाले फल का नाम है। इसी तरह कक्षा 2 का वीरेन्द्र और कंचनलता 'शेर साहब की पूंछ' नामक कहानी पढ़ रहे थे। इस कहानी में आए शब्द 'पनिहारी' के अर्थ को वे नहीं समझ पा रहे थे। कक्षा 3 में पढ़ने वाली पिंकी 'तीन विचित्र' नामक कहानी में विचित्र शब्द का अर्थ नहीं समझ पाई। इसी तरह 'महागिरी' नामक चित्रात्मक पुस्तक में 'विशाल' शब्द का अर्थ बच्चे नहीं पकड़ पाए। लेकिन वे इस पाठ्य सामग्री को समझ गए।

गलतियों को अपने आप सुधारना

बच्चों के पढ़ने के अवलोकनों में यह भी देखा गया कि बच्चे पाठ्य के अंतर्गत अपने पढ़े हुए कठिन व अपरिचित शब्दों के उच्चारण व वर्तनी समझ में न आने पर वे स्वयं उसे सुधारने की कोशिश करते हैं। इसे कक्षा के अवलोकनों द्वारा समझा जा सकता है। शशि कक्षा 3 में पढ़ती है। वह 'अजीब आवाज' नामक कहानी पढ़ रही थी। इस कहानी में आए 'खाली' शब्द को उसने पहले 'खुली' पढ़ा फिर अपने आप ठीक किया। इसी तरह 'कूड़ा' शब्द को पढ़ने के दौरान उसने 'कुड़–कुड़' फिर 'कूड़ा' पढ़कर स्वयं ठीक किया इसी तरह 'शायद' को 'शयाद' पढ़ा फिर स्वयं ही ठीक किया। इस तरह से गलतियों को अपने आप सुधारना बच्चों में पढ़ने के प्रति एक आत्मविश्वास पैदा करता है।

अपने साथियों/शिक्षकों से मदद लेना

बच्चों के पढ़ने की प्रक्रियाओं के दौरान यह भी देखने को मिला कि कुछ बच्चे जिनमें काफी आत्मविश्वास दिखाई पड़ रहा था। वे बिना झिझक के अपने साथियों व शिक्षकों से अटकने वाले शब्दों को पूछ लेते हैं। कक्षा 2 में अध्ययनरत कंचनलता चित्रात्मक पुस्तक 'हाथी और भौंरे की दोस्ती' पढ़ रही थी। कंचनलता इस किताब को बड़ी सहजता से पढ़ रही थी। पढ़ने के दौरान उसे 'बेखबर' शब्द को पढ़ने में दिक्कत आई तो उसने तुरंत शिक्षक से पूछ लिया। इसी तरह 'फेंक' शब्द को भी पढ़ने में भी दिक्कत आ रही थी तो उसने उसे भी तुरंत पूछ लिया। इसी तरह कक्षा के अवलोकनों में यह देखा गया कि समूह में पढ़ते हुए बच्चे समझ में न आने पर अपने शिक्षकों/साथियों से बेझिझक होकर पूछ लेते हैं। और अपनी कठिनाईयों को दूर कर लेते हैं। लेकिन आवश्यकता इस बात की पड़ती है कि कक्षा में बच्चों के लिए इस तरह का माहौल पहले से मौजूद हो। यह प्रक्रियाएं बच्चों में पढ़ने व सीखने के प्रति आत्मविश्वास पैदा करती हैं।

बच्चों के पढ़ने में समस्याएं

बच्चों में पढ़ने की समस्याओं को समझने के लिए उनकी त्रुटियों के पैटर्न को समझना जरूरी रहता है। इन पैटर्नों को निम्न बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है –

अपने पूर्व अनुभवों व अनुमानों के प्रति अति आत्मविश्वास

बच्चों के पढ़ने के अवलोकनों में देखा गया कि कभी–कभी कुछ बच्चे अपने पूर्व अनुभवों व अनुमानों के प्रति अति आत्मविश्वास से भरे रहते हैं और पढ़ने के दौरान गलतियां करते रहते हैं। कक्षा 3 में पढ़ने वाला नरपत सिंह अच्छा पाठक है। लेकिन एक दिन उसे 'घोंघा' नामक एक लेख दिया गया तो वह घोंघा/घोंघे को घोड़ा/घोड़े पूरे पाठ में ही पढ़ता रहा। इसी तरह कक्षा 3 में पढ़ने वाले कई बच्चों उमा, विमला आदि भी घोंघा/घोंघे को घोड़ा/घोड़े ही पढ़ती रहीं। इसी तरह कक्षा 2 का वीरेन्द्र 'चूहा और धागा' नामक कहानी के शीर्षक को 'चूहा और गधा' ही पढ़ा। इसी तरह कक्षा 3 की शशि 'हाय रे मिर्च' नामक कहानी को 'हरी मिर्च' ही पढ़ती रही।

चित्र संकेतों का सही ढंग से न पकड़ पाना

कक्षा के अवलोकनों में यह देखा गया कि कुछ बच्चों का पूरा जोर मुद्रित संकेतों पर ही रहता है। वे पाठ्य के साथ बने चित्रों पर कोई ध्यान नहीं देते। इसे भी बच्चों के पढ़ने के अवलोकनों के दौरान देखा जा सकता है। कक्षा 3 की आरती 'भेड़िया और घोंघा' नामक कहानी पढ़ रही थी इस कहानी को पढ़ते हुए उसने घोंघा/घोंघे को घोड़ा/घोड़े ही पढ़ती रही। जबकि इस कहानी में घोंघा का चित्र भी दिया गया था। इसी तरह कक्षा 1 में पढ़ने वाला बाली 'चिड़िया का बच्चा कैसे छूटा' नामक कहानी पढ़ रहा था उस कहानी में 'पिंजरा' शब्द वह नहीं पढ़ पा रहा था। जबकि कहानी में पिंजरे का चित्र तीन जगह बना हुआ था।

ग्राफोफोनिक्स समस्याएं

कक्षा 2 की रूपा 'छोटा शेर बड़ा शेर' नामक चित्रात्मक पुस्तक पढ़ रही थी। उस किताब में आए शब्दों को उसने लंगूर को अंगूर, तरफ को तारीफ व पीछा को छिप पढ़ा। इसी तरह कक्षा 3 का मंगल प्रसाद 'हाय रे मिर्च' नामक कहानी पढ़ रहा था। पढ़ने के दौरान वह अक्षरशः शब्दों को पढ़ने की कोशिश कर रहा था। हल्कू, हल्दी, हुक्का आदि शब्द नहीं पढ़ रहा था। 'हांफते–हांफते' को 'हँफुल' पढ़ा। इस प्रकार उसका पढ़ने के दौरान सारा जोर मुद्रित अक्षरों व शब्दों में था। कक्षा 1 के नीरज ने 'शेर साहब की पूंछ' नामक कहानी में आए शब्द 'शिकार' को 'सुनकर' तथा 'बूढ़ा' को 'बड़े' पढ़ा। कक्षा 2 की सोनी ने 'कहीं नहीं' नामक चित्रात्मक पुस्तक में 'गोल' को 'लोग' पढ़ा। कक्षा 2 की खुशबू 'चिड़िया और लाली' नामक कहानी में उसने 'चोंच' को 'सोचा', 'ईनाम' को 'इनमें' 'कसीदा' को 'कसीद', 'काढ़कर' को 'कढ़ाकर' तथा 'कामनाएं' को 'कमनाएं' पढ़ रही थी। इन त्रुटियों से यह समझा जा सकता है कि बच्चों को अक्षर, मात्राओं व ध्वनियों आदि की पहचान तो रहती है लेकिन उसे सही ढंग से इंटरप्रेट नहीं कर पाते। इस जगह पर शिक्षकों को उनकी मदद करने का प्रयास करना चाहिए।

मुद्रित संकेतों पर अति निर्भरता

कक्षा के अवलोकनों में यह देखा गया कि कुछ बच्चे अपने पढ़ने के दौरान मुद्रित संकेतों पर अत्याधिक निर्भर रहते हैं और वे पढ़ने में अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया में पिछड़ जाते हैं। कक्षा 1 में पढ़ने वाला राजेश 'भालू का बच्चा' नामक चित्रात्मक पुस्तक से पूर्व परिचित है। यह किताब शिक्षिका द्वारा कक्षा में तीन–चार बार पढ़वाई जा चुकी है। लेकिन उसके लिए उसे पढ़ पाना काफी मुश्किल भरा काम था। पढ़ने के दौरान देखा गया कि उसका पूरा ध्यान मुद्रित संकेतों पर था तथा चित्रों द्वारा शब्दों को पढ़ने का कोई प्रयास नहीं कर रहा था। इस कारण पढ़ना उसके लिए कष्टप्रद कवायद प्रतीत हो रही थी। इसी तरह कक्षा 1 की लक्ष्मी 'चिड़िया का बच्चा कैसे छूटा' नामक कहानी पढ़ रही थी। इस कहानी में लिखित पाठ्य के साथ–साथ चित्र भी बने हुए थे। लेकिन लक्ष्मी चित्रों से कोई सहायता नहीं ले रही थी और पढ़ने में अटक रही थी। क्योंकि उसका पूरा जोर लिखे हुए शब्दों को पढ़ने पर था। यह कहानी उसके लिए अपरिचित कहानी थी। इसलिए वह पढ़ने में काफी दिक्कत महसूस कर रही थी।

बच्चों का लिखना – कुछ अवलोकन

बच्चों के स्वतंत्र रूप से लिखने की क्षमता को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है कि उनके लिखे हुए में हम लिखने के तकनीकी पहलुओं – मात्रा, वर्तनी, व्याकरण आदि पर ध्यान देने के बजाए उसकी अभिव्यक्ति, विषयवस्तु पर अधिक ध्यान दें। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए बच्चों द्वारा लिखित सामग्री को गौर से देखने पर निम्न बिन्दु उभर कर आए –

लिखने की शैली

बच्चों द्वारा लिखित सामग्री में यह देखने को मिलता है कि हरेक बच्चे के लिखने की अपनी शैली है। यह शैली बच्चों के पूर्व ज्ञान, अनुभव, भाषा आदि पर निर्भर करती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लिखने का कोई बना बनाया तरीका नहीं है। सभी बच्चे अपने–अपने तरीके इजाद करते हैं। इसे बच्चों के निम्न नमूनों में देखा जा सकता है। यहां यह देखने की बात है कि एक चित्र पर बच्चों ने अलग–अलग तरीके से लिखा –

- *चार बच्चे थे। वहां एक पेड़ पर बहुत से आम लगे थे। चारों लड़कों ने सोचा कि इस पेड़ पर बहुत से आम लगे हैं और चारो बच्चे पेड़ पर चढ़ गए और सब बच्चे आम तोड़ने लगे। एक बच्चे ने डाली पकड़ कर हिलाया। तो उस पेड़ पर लगी हुई मधुमक्खियां भाग गईं। तो सब बच्चों ने देखा कि मधुमक्खियां उन्हें काटने लगीं। तब दो बच्चे नीचे गिर गए। दो बच्चे उल्टा टंग गए। .....*

  – नरपत सिंह कक्षा 3

- *एक आम का पेड़ था। चार बच्चे थे। पेड़ पर एक छत्ता लगा हुआ था। बच्चे आम तोड़ते थे। आम तोड़ने में मधुमक्खी उड़ने लगी। .....*

  – पिंकी कक्षा 3

- *एक था आम का पेड़। एक दिन लड़के आम के पेड़ पर चढ़ गए। .....*

  – मंगल प्रसाद कक्षा 3

- *एक दिन चार लोग थे। उनमें से दो लड़की थी और दो लड़के थे। उस पेड़ में बहुत से आम लगे थे। उसमें एक मधुमक्खी का छत्ता लगा था। .....*

  – राजेश कुमार कक्षा 3

- *एक था आम का पेड़। उस पेड़ पर बहुत सारे आम लगे थे। चार बच्चे थे। चारों ने कहा कि पेड़ पर चढ़ा जाए। आम तोड़ा जाए। .....*

  – शशि देवी कक्षा 3

- *चार बच्चे थे। उनमें से एक नाम चीटू, एक नाम मीटू और तीसरे का नाम मीरा और चौथी का नाम राजू। चारों बच्चे आम के पेड़ पर लटके थे। उसी आम के पेड़ पर एक छत्ता लगा था। .....*

  – अमर कुमार कक्षा 3

वाक्य संरचना

बच्चों के लिखने में शब्दों और एक ही बात के बार–बार दोहराव दिखाई पड़ते हैं तथा वे लिकिंग शब्दों का अपने लिखने में बार–बार प्रयोग करते हैं। व्याकरण का सही इस्तेमाल नहीं कर पाते थे। धीरे–धीरे इसमें सुधार दिखाई पड़ता है। इन्हें निम्न नमूनों में देखा जा सकता है –

- *एक जंगल में एक पेड़ था। उस पर बहुत से आम लगे हैं। और एक दिन कुछ बच्चे आम खाने के लिए आए थे। तो दो बच्चे बहुत खुश थे। और वे सब आम खाने लगे। और उस पर एक मधुमक्खी का छत्ता लगा था। दो बच्चों को काटने के लिए और सब उसके बच्चे दो बच्चों को डरा दिया। दो बच्चे नीचे गिर गए थे। तो दो बच्चे आम तोड़ रहे हैं। .....*

  – ऊषा देवी कक्षा 2

- *एक जंगल में एक पेड़ है। उसमें रोज बच्चे आम खाने जाते थे। एक दिन सब बच्चे आम के पेड़ पर चढ़ गए। तभी हवा चली। अचानक तभी आम की डाल फट गई। और मधुमक्खी का छत्ता लगा था और उसमें से मधुमक्खी उड़ने लगी और सभी बच्चे रोने लगे। .....*

  – खुशबू कक्षा 2

- *एक बहुत बड़ा आम का पेड़ जंगल में था। तो उसमें बहुत से आम लगे थे। एक दिन अचानक आई। बहुत हवा आई। तो आम का पेड़ टूट गया था और उसमें की डरंगे फट गई थीं। .....*

  – रेखा कक्षा 2

विषयवस्तु

बच्चों द्वारा लिखित सामग्री में यह देखने को मिलता है कि वे अपने लिखे हुए में 'एक मेन आइडिया' को अच्छी तरह बांध सकते हैं। इसे समझने के लिए बच्चों के लिखे हुए इस अंश को पढ़ा जा सकता है –

- ***चित्र देख कर लिखो –*** *एक लड़का था। उसका नाम गोपाल गड़रिया था। वह रोज अपनी गाय चराने जाता था। वह एक दिन गाय को चराने के लिए जा रहा था। उसे एक कौवा मिला। तो वह कहने लगा कि तुम आज गाय चराने जाना नहीं। वहां एक शेर है। अगर तुम मेरी बात न मानो तो जाकर देख लो। जब गोपाल गड़रिया वहां गया तो उसने देखा कि शेर पानी पी गया था। तब गोपाल गड़रिया चुपके से लौट आया। तब कौवे ने पूछा कि मिला शेर। गोपाल गड़रिया ने कहा हां, दोस्त तुम ठीक कह रहे थे।*

  – अशोक कुमार कक्षा 3

बच्चों के लिखे हुए अंशों को देखकर यह ज्ञात होता है कि अगर उनके लिए चित्र/विषयवस्तु ज्यादा जटिल हो तो उसे समेकित करने में उन्हें अच्छी–खासी दिक्कत होती है और उनका लिखा हुआ बिखर जाता है। इसे निम्न अंश को पढ़कर समझा जा सकता है –

- ***चित्र देख कर लिखो –*** *एक जंगल में एक पेड़ है। उसमें रोज बच्चे आम खाने जाते थे। एक दिन सब बच्चे आम के पेड़ पर चढ़ गए। तभी हवा चली। और अचानक आम की डाल फट गई। मधुमक्खी का छत्ता लगा था और उसमें से मधुमक्खी उड़ने लगी। और सभी बच्चे रोने लगे। और जब आंधी आई तब आम भी गिरे थे। और लड़की गिर गई थी। और डाल जमीन पर आ गई थी। तभी सभी बच्चों के चोट लग गई थी। तभी अचानक एक मधुमक्खी का छत्ता जमीन पर आ गया था। तभी सभी बच्चे भाग लिए।*

  – खुशबू कक्षा 2

शब्दावली

बच्चों के लिखे हुए में स्थानीय शब्दावली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में दिखाई पड़ता है। इसके साथ ही उनके लिखे हुए में उनके द्वारा पढ़ी हुई सामग्री के वाक्य काफी जगह दिखाई पड़ते हैं। जैसे – बहुत समय पहले की बात है/जानते हो आदि वाक्य। इन्हें हम निम्न अंशों में देख सकते हैं –

- *एक बार हमारे गांव में सर्कस दिखाने आया। तो हमने कुछ देखा और जो देखा तो कुछ इस तरीके का था। .....*

  – अमन कुमार कक्षा 3

- *बहुत समय पहले एक गांव में एक आदमी था। एक बार उस आदमी के घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। तो आदमी ने सोचा कि खेत में कुछ बोया जाए। तो आदमी ने अपने गांव में एक ट्रैक्टर वाले से कहा कि हमारा खेत जोत दो। .....*

  – मंगल प्रसाद कक्षा 3

- *एक गांव में रामू नाम का आदमी था। रामू के बहुत खेत था। रामू एक दिन ट्रैक्टर से खेत जोत रहा था। कि खेत में तीन भैंसे आ गई थीं। रामू ने अपने लड़के से कहा कि जाओ खेत से भैंसे पकड़ लाओ। फिर लड़का खेत से तीनों भैंसों को खेद लाया था। ..... – प्रदीप कुमार कक्षा 3*
- *एक किसान था। उसके दो पेड़ लगे थे। वह रोज सुबह शाम खेत को जाता था। एक दिन वह खाना खाने चला गया। तो दो लड़की और दो लड़के पेड़ पर चढ़ गए। ..... – ऊषा देवी कक्षा 2*

बच्चों का लिखना – कठिनाईयां

लिखे हुए में विचारों में अस्पष्टता

बच्चों के लिखे हुए में कहीं–कहीं विचारों में अस्पष्टता दिखाई पड़ती है। जिन्हें बच्चों के लिखे हुए निम्न अंशों से समझा जा सकता है –

गर्मी का मौसम था। पांच बच्चे दो आम के पेड़ पर चढ़कर आम तोड़ रही थी। उस दिन बाबा ने पेड़ों को बचाने नहीं आए थे। घर पर बैठे थे। वहां से देखा पांच बच्चे आम के पेड पर चढकर आम तोड रहे थे। बाबा ने लाठी ली और उन दो पेडों की ओर दौडे। पांच बच्चों को दौडा लिया। तीन बच्चे तो भागे और बाबा उन तीनों को दौड़ा लिया। जो बच्चे पेड़ पर आराम से आम तोड़ रहे थे वे भी मौका पाकर भाग गए। बाबा ने सारे आम बीन कर घर ले गया। पांचों बच्चों की घर जाकर शिकायत किया।

– अमर कुमार, कक्षा 3

विषयवस्तु से भटकाव

बच्चों के लिखे हुए में कहीं–कहीं विषयवस्तु से भटकाव दिखाई पड़ता है। उन्हें अपने लिखे हुए को समेकित करने में दिक्कत दिखाई पड़ती है। इसे बच्चों के लिखे हुए निम्न उदाहरण में देखा जा सकता है –

एक गांव है। उस गांव के एक किसान अपने खेत में कौवों, कबूतरों को और तोतों को और उन सारे पक्षियों को अपने खेत में बाजरा का खेत बचा रहा है। और उस आदमी का नाम रामू है और भैंसे भी चर रही हैं। और एक आदमी अपने खेत में ट्रैक्टर से खेत जोत रहा है। रामू को सारी चिडियां बिलवां रही हैं। और रामू डंडी लेकर सारी चिड़ियों को भगा रहा है। और एक पेड़ पर सारे के सारे पक्षी बैठ जाते हैं .....।

– सुग्रीव कुमार, कक्षा 3

लेखन में तार्किक क्रम का अभाव

बच्चों के लेखन में तार्किक क्रम का अभाव भी दिखता है। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है –

एक बार एक लड़की एक दिन आम के पेड़ पर चढ़ती। वहां पेड़ पर एक छत्ता लगा था। वह आम तोड़ती है वहां मधुमक्खी उड़ने लगी। तो वह आम तोड़ती एक डाली दूसरी डाली पर वह लटका था। वह उससे लड़की फिर गिर गई। .....

– पिंकी देवी, कक्षा 3

अनुपयुक्त शब्दावली

बच्चों के लिखे हुए में कहीं–कहीं अनुपयुक्त शब्दावली दिखाई पड़ती है। इसे बच्चों में निम्न उदाहरणों से देखा जा सकता है –

एक दिन चार लोग थे। .....

पेड़ भी बहुत घनघोर था। .....

रामू को सारी चिड़ियां बिलवा रही हैं। .....

वर्तनी, व्याकरण संबंधी त्रुटियां

बच्चों के लिखे हुए में वर्तनी व व्याकरण संबंधी त्रुटियां आमतौर पर पाई जाती हैं। इसे बच्चों के लिखे हुए में आसानी से देखा जा सकता है –

एक जंगल में एक पेड़ है। उसमें रोज बच्चे आम खाने आते थे। एक दिन सभी बच्चों आम के पेड़ पर चढ़ा .....।

दोनो दोस्त एक जिगह अठिका हुए। .....

गिल्हरी ने स्कूल जाना सुरू किया। .....

खरगोश उसी पेड़ के निचे रहता था। .....

उसके खेत में बाजड़ा लगा था। .....

एक आदमी ने आम के पवधे लगाए। .....

बच्चों के पढ़ने–लिखने का कार्यक्रम – उपलब्धियां

- बच्चों के स्वतंत्र रूप से लिखने के अभ्यासों से इस बात की पुष्टि होती है कि बच्चों को अपनी बात कहने/व्यक्त करने से उनके आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी हुई है। जो बच्चे शुरूआत में लिखने से डरते थे वे अब पूर्ण आत्मविश्वास के साथ विभिन्न विषयवस्तु पर लिखने में रूचि लेते हैं। उदाहरण के लिए कुछ बच्चों के लिखे हुए को हम देख सकते हैं –

  चित्र देख कर लिखो – *एक गांव में दो लड़के रहते थे। एक खेत में आम का पेड़ लगा था। पेड़ के ऊपर मधुमक्खी लगी थीं। लड़के अचार के लिए आम लेने आए थे। तो वे ऊपर चढ़े और आम तोड़ने लगे थे। ढरंगे हिल गई थीं। तो पत्ता मधुमक्खी के छत्ते में पड़ गया था तो मधुमक्खी उड़ने लगी थीं। तो दोनों लड़कों को काटने लगी थीं। तो दोनों पेड़ से नीचे गिर गए थे। तो मधुमक्खी उड़ कर दोनों लड़कों को काटने लगी थीं। तो दोनों लड़के घर भाग गए थे। घर जाकर गाय का गोबर लगाया था तो नीक हो गया था। तो लड़के एक दिन बलेता ले गए थे। और मधुमक्खी का छत्ता जला दिया था। तो लड़के आम तोड़ लाए थे। अचार बनाया था।*

  – वीरेन्द्र कुमार, कक्षा 2

  अधूरी कहानी पूरी करो – *एक हाथी था। हाथी केले खाता था। तालाब का पानी पीता था। पानी में नहाता था। तालाब में मछली रहती थीं। तालाब के पास एक लड़का रहता था। नाम था उसका सलीम। सलीम मछली पकड़ता था। एक दिन ..... सलीम मछली पकड़ते–पकड़ते एक बड़े गड्ढे में गिर गया और तभी एक उधर से हाथी आया। सलीम चिल्ला रहा था। हाथी को यह देखकर दया आ गई। उसने सलीम को निकाल लिया और सलीम ने कहा, मेरे भाई अगर आप न होते तो आज हम मर जाते। हाथी ने सलीम से कहा लेकिन अब मछली पकड़ने मत आना। सलीम अपने घर चला गया।*

  – अशोक कुमार, कक्षा 3

शब्दों के आधार पर कहानी लिखो – *गिलहरी, बस्ता, स्कूल, खरगोश, बैलगाड़ी, नदी, झूला, डंडा।*

एक गिलहरी और एक खरगोश था। गिलहरी जो थी वो पेड़ पर रहती थी और खरगोश उसी पेड़ के नीचे रहता था। एक दिन खरगोश ने कहा मैं तो झूला झूलना चाहता हूं। तो गिलहरी ने कहा तो मेरे दोस्त तुम रस्सी ले आओ मैं पेड़ पर चढ़ कर झूला डाल दूंगा। फिर एक बार गिलहरी गांव के स्कूल में गई तो वहां सब बच्चे टाट–पट्टी पर बैठे थे तो गिलहरी का मन हुआ कि मैं भी स्कूल जाऊं। तो जब शाम हो गई तो दोनों एक जगह इकट्ठा हुए तो गिलहरी ने खरगोश से बताया तो खरगोश ने कहा कि मैं तुम्हारे लिए बस्ता ले आउंगा। गिलहरी ने स्कूल जाना शुरू किया। तो गुरूजी ने एक प्रश्न पूछा तो गिलहरी नहीं बता पाई। तो गुरूजी ने गिलहरी को खूब डंडे से मारा। तो उसके हाथ फूल गए। अब गिलहरी पेड़ पर नहीं चढ़ पाती थी न चल पाती थी। तो एक दिन क्या हुआ रास्ते में बैठे–बैठे बोर हो गए कि कोई आए तो उधर से बैलगाड़ी आ रही थी तो खरगोश ने गिलहरी को बैलगाड़ी पर बैठा दिया। तो आगे एक नदी पड़ी तो खरगोश ने नदी पार कैसे की? उसने बैलगाड़ी नदी के किनारे खड़ी की और नाव में बैठकर डाक्टर के पास गए थे। तब डाक्टर ने दवाई दी तो गिलहरी ठीक हो गई तो फिर दोनों साथ–साथ रहने लगे थे। कहानी – खरगोश और गिलहरी।

– प्रदीप कुमार, कक्षा 3

कहानी पढ़कर अपने मन से तुम भी कहानी लिखो – *एक खेत था। उस खेत में एक पेड़ था। उस पेड़ पर पक्षी आया। उस पेड़ पर बैठ गया। वह पेड़ उसे बहुत अच्छा लगा। वह उस पेड़ पर अपना घोसला बनाने लगा। उसी पेड़ पर एक सांप रहता था। सांप ने देखा मेरे पेड़ पर यह कौन रहने लगा है। तो सांप ने देखा कि पेड़ पर एक पक्षी का घोसला था। तभी वहां एक पक्षी आ गया। सांप वहीं छिप गया। जब पक्षी अपने घोसले में बैठ गया तभी सांप ने आकर, फुंकार कर डराकर उसे पेड़ से भगा दिया। फिर सांप वहीं रहने लगा।*

– अमर कुमार, कक्षा 2

- कुछ बच्चों के लिखने में सुदृढ़ता दिखाई पड़ती है। उनके अपने लिखे हुए में एक मुख्य आईडिया स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। ऐसा हम बच्चों के निम्नलिखित अंशों में देख सकते हैं –

पेड़ पर चिड़िया

एक बाग में चिड़िया बैठी आम खा रही थी। उधर से एक कौवा आया। कौवे ने कहा, "मेरे पेड़ के आम क्यों खा रही है मैं तुझे मारूंगा। चिड़िया ने कहा कि बाग के पेड़ क्या तुम्हारे हैं? मैं खाऊँगी। कौवा चिड़िया को मारने के लिए उड़ा और चिड़िया उड़ गई। उधर से एक लड़के ने कौवे को तीर मारा कौवा मर गया और चिड़िया खुशी से आम खाने लगी।

– वीरेन्द्र कुमार, कक्षा 2

बिल्ली और कुत्ता

एक बिल्ली हमारे घर में रहती थी। एक दिन वह हमारे घर से भाग गई। तो सारे कुत्ते उस पर भौंकने लगे। तो बिल्ली हमारी छत पर चढ़ गई। तो मैंने उसे अपने घर से रोटी दिया। तो बिल्ली बहुत खुश हुई।

– ऊषा, कक्षा 2

चिड़िया और बिल्ली

एक चिड़िया रोज अपने अंडे सेती। और पेड़ पर रहती थी। एक दिन क्या हुआ कि एक बिल्ली आई और चिड़िया को झपटी। और कहा, ''कि मैं तुम्हें खा जाऊँगी।'' चिड़िया बोली, ''हमें नहीं खाओ, मैं अपने अंडे सेती हूँ।''

– खुशबू, कक्षा 2

- काफी बच्चों के लिखने में एकरूपता दिखाई पड़ती है। जो बच्चे पहले किसी चित्र/विषयवस्तु के बारे में अलग–अलग वाक्यों में लिखते थे और उनके लिखने में एक बिखराव दिखाई पड़ता था। अब वे समेकित रूप से लिखने का प्रयास करते हैं। इन्हें निम्न उदाहरणों में देखा जा सकता है। इन बच्चों को छः माह पूर्व व छः माह बाद एक ही चित्र पर अपने मन से लिखने को कहा गया था। यहां उनके लिखने में आए अंतर को निम्न अंशों द्वारा समझा जा सकता है –

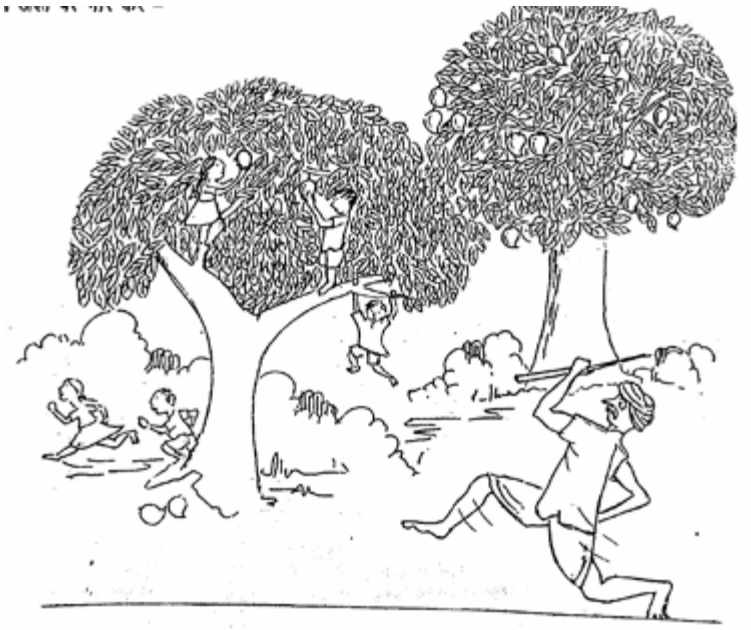

– *रामू और अंजाना आम तोड़ रही थी। तो जिसका पेड़ था, तो उसने रपटा कर कहा कि कौन आम तोड़ रहा है? अभी मरियहों। यह सुनकर वे भाग लिए और डर गए। आम छोड़ कर भाग गए।*

– शशि, कक्षा 3, 12.9.2003

– *एक बार ऐसा हुआ कि पांच लड़कों ने सलाह किया कि आज वहां आम तोड़ने चलना है। तो जब शाम हुई तो वे पांचों गए आम तोड़ने और रामू की बहन बोली रामू देखो मैं एक पका आम पा गई हूं। चलो भाग चलें नहीं तो जिसका आम का पेड़ है वह आ जाएगा। तो पीट देगा। तभी अचानक उसे बूढ़ा दिखा। उसने कहा रूको अभी मैं आ रहा हूं। फिर दो लड़के भाग लिए और चिल्लाकर तीनों बच गए। और उनसे कहा नीचे उतरो। तभी वे चौंक उठे। चलो रामू आज तो घर में मारे जाएंगे। फिर वे तीनो नीचे उतर गए। तो बूढ़े ने तीनों को मारा और कहा अब तो कभी नहीं आओगे। तो वे बोले नहीं बाबा अब नहीं आएंगे छोड़ दो। उसने कहा नहीं छोडुंगा। तब तक तुम्हारे घर में नहीं कहुंगा। फिर वे तीनों को उसके घर ले गया। और उसकी मम्मी से कहा कि इन तीनों को आम तोड़ने पठाया था। औरत बोली नहीं भाई मैं तो आम ताोड़ने नहीं पठाया हूं। उसकी मम्मी कही आज छोड़ दो। फिर उसने छोड़ दिया था।*

– शशि, कक्षा 3, 12.3.2004

– *आम का पेड़ लगा है। और पेड़ पर बच्चे हैं। आम तोड़ रहे हैं। और कुछ बच्चे पेड़ पर चढ़ रहे हैं। और आम तोड़ने के लिए लटके थे। और एक आदमी डंडा लेकर निकला। बच्चों को रपटाया।*

– उमा देवी, कक्षा 3, 12.9.2003

– *एक गांव था। गांव से बच्चे आम ढूंढ़ने निकले। तो एक खेत में आम के दो पेड़ दिखाई दिए। तो उन सबने सलाह की चलो वह पेड़ दिख रहा है। तो उसमें के एक लड़के ने कहा कि इस पेड़ में बहुत सारे आम लटके हैं। तो सब बच्चों ने कहा चलो तो सब बच्चे चल दिए। तीन बच्चे पेड़ पर चढ़ गए। दो बच्चे आम बीनते थे। तब बच्चों ने देखा कि एक बाबा आता है तो उसने कहा सोनू और मोनू जल्दी उतरो एक बाबा आता है। और जल्दी ही बाबा आ गया। उसने एक लड़के को पकड़ कर पूछा। और वह लड़का आम लिहे था। उसने बाबा से कहा आम ले लो मगर हमें छोड़ दो।*

– उमा देवी, कक्षा 3, 12.3.2004

– *एक आम का पेड़ था। उस पर आम बहुत लगे थे। हम लोग उस पेड़ पर आम खाते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि जिसका पेड़ था। साइकिल से आ गया मैं डर के मारे उसी पेड़ पर चढ़ा बैठ रहा था। जब आदमी उस पेड़ के नीचे से चला गया तब मैं पेड़ के नीचे उतरा था। आम खाकर मैं चल दिया था। आम के पेड़ के नीचे दो आम पड़ा था। एक लड़की एक लड़का आम उठाए लेहे जा रहे थे।*

– अमन कुमार, कक्षा 3, 12.9.2003

– *बहुत समय की बात है। एक खेत में दो पेड़ थे। तो जिसके पेड़ थे। वह आदमी बहुत गरीब था। तो एक दिन तीन लड़के और दो लड़की स्कूल पढ़ने जाते थे और एक दिन सबका मन हुआ कि कहीं चलो आम खाते हैं, तोड़ा जाए। तो सब बच्चे आम तोड़ने लगे। जब बच्चे पेड़ पर चढ़े तो आम वाला आ गया। तो आदमी ने पेड़ पर बच्चों को देखा तो आदमी दौड़ने लगा। तो जब आदमी पेड़ के नीचे पहुंचा तो आदमी ने कहा चलो अभी मैं सबको बंद कर देता हूं। तो सब बच्चे बहुत डर गए। तो एक लड़का पेड़ से उतर नहीं पाता था। तो लड़के ने सोचा कि पेड़ पर से कूद जाउंगा। तो लड़का पेड़ से हिलगा तो आदमी ने कहा हाली उतरो नहीं अभी डंडा मारूंगा। तो लड़का बहुत डर गया तो सब बच्चों ने आदमी से कहा हमको मत मारो। नहीं तो मैं मर जाउंगा। तो मेरी मां मुझको बहुत मारेगी। तो मेरी मां कहेगी कि मेरी बेटी मर गई तो मैं क्या करूंगी? इसलिए आमदी ने सब बच्चों को छोड़ दिया होगा।*

– अमन कुमार, कक्षा 3, 12.3.2004

– *दो आम के पेड़ हैं। और आम बहुत लगी है। बच्चे आम तोड़ रही है। आम का पेड़ था। उस पर बच्चे चढ़ गए। आदमी ने रपटाया। और बच्चे आम बीन रहे थे। आदमी ने बच्चों को रपटाया। बच्चे आम डाल कर भाग गए।*

– पिंकी देवी, कक्षा 3, 12.9.2003

– *एक खेत में दो पेड़ थी। वह में बहुत से आम लगी थी। दो लड़की और दो लड़के को बहुत से आम दिखा तो वह तोड़ कर भाग गई। जब वह भागी तो पेड़ जिसका था वह क्या किया। डंडा लेकर रपटाया। तब वह दोनों बहुत तेजी से भागने लगी। वह दोनो रोने लगी कि वह भाग नहीं पाती थी। कि वह आदमी बहुत तेजी से भागता था। वह दोनों थक गई थीं। एक लड़का गिर गया था। एक लड़की बहुत तेजी से भागती थी। वह लड़का भाग नहीं पाया तो वह रोने लगा। तब वह क्या किया कि एक पेड़ पर चढ़ गया। वह आदमी बहुत थक गया था। वह एक पेड़ के नीचे लटका था। दो लड़के पेड़ पर चढ़ी थी। दोनों आम तोड़ती रही। फिर वह आदमी घर चला गया। – पिंकी देवी, कक्षा 3, 12.3.2004*

– *बच्चे आम तोड़ रहे हैं। आम के पेड़ लगा है। लोग दौड़ लगा रहे हैं। आम जमीन पर पड़ा है। एक बच्चा डार पकड़े है। बादल दिख रहा है। बच्चे दौड़ लगा रहे हैं। आम लगे हैं। पेड़ में पत्ती लगी हैं।*

– सुग्रीव कुमार, कक्षा 3, 12.9.2003

– *बहुत समय की बात है। एक खेत में दो आम के पेड़ लगे हैं। तो बच्चे उस पर आम तोड़ रहे हैं। तब आदमी डंडा लेकर उन बच्चों को रपटा रहा है। तब आदमी ने जो आम नीचे पड़ा था उसे उठा कर अपने घर लौट आया था। तब उसी पेड़ पर बच्चे चुपचाप बैठे रहे और आदमी चले गए। तब तीनों बच्चे नीचे उतरे और घर चले गए थे। तब आदमी उसी पेड़ पर एक दिन पेड़ पर लधर कर बैठ गया था तो पांचों बच्चे फिर आम तोड़े तो आदमी ने एक बच्चे को पकड़ लिया। चार भाग गए। और उसे पकड़े रहे। लड़के ने सोचा कि इसे छुड़ाकर भागें। तो लड़के ने कस कर छुड़ाकर भाग गया। और तब पांचों बच्चे घर चले गए थे।*

– सुग्रीव कुमार, कक्षा 3, 12.3.2004

– *आम तोड़ रहा है। आम के पेड़ में आम बहुत सारे हैं। आम के दो पेड़ हैं। आम वाला भगा रहा है। एक लड़का कूदने जा रहा है। एक लड़का और एक लड़की आम को पके देख रहे हैं। दो आम नीचे पड़े हैं। खूब घना पेड़ है। आम डाल कर भाग रहे हैं।*

– राजेश कुमार, कक्षा 3, 12.9.2003

– *एक समय की बात है। एक खेत में दो आम के पेड़ लगे थे। तीन लड़के और दो लड़कियां थे। एक आदमी डंडा लिहे दौड़ रहा था। और मुरैठा बांधे था। दो नीचे थे। दोनों दौड़ते–दौड़ते भागे और एक लड़का डाली पर लटका था। तभी एक आदमी को देख लिया था। ऊपर वाले आम बहुत ही लालची थे। वह दोनों लड़की लड़का देख नहीं पाए थे। जो दो नीचे लड़की लड़का थे वे दोनों दो आम छोड़कर भाग गए थे। दो लड़की और लड़के आम पके ढूंढ़ रहे थे। तब तक एक लड़का कूद पड़ा। फिर दूसरे पेड़ में आम खूब सारे लगे हुए थे। दोनों आम पेड़ वाला लिया होगा। वह उन तीनों को मारता था।*

– राजेश कुमार, कक्षा 3, 12.3.2004

- कक्षा में बच्चों के पढ़ने के नियमित रूप से मौके देने से बच्चों में पढ़ने का आत्मविश्वास जागृत हुआ है। अब वे विभिन्न तरह की सामग्री पढ़ने में रुचि दिखाते हैं। और एक स्वतंत्र व आत्मविश्वासी पाठक की तरह पढ़ते हैं। वे अपनी कक्षा में अपने साथियों व शिक्षकों के साथ मिलजुल कर भी पढ़ते हैं। इसकी पुष्टि बच्चों के पढ़ने के निम्न अवलोकनों द्वारा किया जा सकता है –

  – कक्षा 3 में पढ़ने वाली खुशबू 'कहीं नहीं' नामक चित्रात्मक पुस्तक पढ़ रही थी। इस पुस्तक की मुख्य पात्र 'मुन्नी' को उसने पूरी किताब में 'मुनिया' ही पढ़ा। हालांकि उसके 'मुनिया' पढ़ने से किताब की कहानी पर कोई फर्क नहीं पड़ा। लेकिन यहां यह बात उभर कर आती है कि उसका अपना पूर्व अनुभव पर अति आत्मविश्वास मुद्रित संकेत पर ध्यान नहीं दिलवाता। वह अपनी भाषा, अपने परिवेश व पढ़े हुए के पूर्व अनुभवों से पढ़ने का प्रयास करती है। जैसे – 'मुन्नी' की अपेक्षा 'मुनिया' उनके लिए ज्यादा प्रचलित नाम है। इस तरह उसने पाठशाला का अर्थ उसने चित्र देखकर जान लिया और कहानी में आए 'खंडहर' शब्द का अर्थ उसने 'छत' बताया।

  – कक्षा 1 में पढ़ने वाला बालि 'चूहा और बिल्ली' नामक पाठ्य सामग्री पढ़ रहा था। इस सामग्री में लिखे हुए के साथ चित्र भी बने हुए थे। यह पाठ्य सामग्री उसके लिए नई थी। पढ़ने के दौरान आए कुछ शब्दों जैसे – उदास, लौटती पर थोड़ा अटका लेकिन बाद में वह पढ़ गया। कहानी में आए 'गल' शब्द को उसने 'गाल' पढ़ा क्योंकि मछली पकड़ने के संदर्भ में उसके

परिवेश के अनुसार यह शब्द फिट नहीं है। उसे यहां 'कांटा' या 'चारा' कहा जाता है जबकि पाठ्य में 'गल' व 'बंसी' का प्रयोग किया गया है। उसके पढ़ने में एक आत्मविश्वास झलक रहा था। यह लग रहा था कि उसकी पढ़ने में रूचि बनी है। इस पाठ्य सामग्री को पढ़ने के उपरांत उसने उसका सार निम्न शब्दों में बताया – चूहा रहेय, चूहा का पकड़िस रहे बिल्ली, चूहा बोतल में घुसिगा फिर चूहा निकर के भाग गवा। चूहा बिल में घुसिगा। फिर चूहा कहिस – किसे ढूंढ़ रही हो?

– कक्षा 1 में अध्ययनरत् सोनू भालू का बच्चा नामक पुस्तक पढ़ रहा था। यह चित्रों से सजी पुस्तक उसके लिए पूर्व परिचित है। पढ़ने के दौरान उसमें काफी उत्साह था। हालांकि उसके पढ़ने की रफ्तार अभी मध्यम है। 'कोशिश' शब्द को पढ़ने में उसे काफी दिक्कत आई। किताब में आए वाक्य 'चिड़िया उसके लिए फूल ले आई' को उसने पढ़ा 'चिड़िया उसके लिए फूल तोड़ लाई' इसे उसने अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ा लेकिन फिर स्वतः उसे ठीक भी किया। किताब पर बातचीत के दौरान उसने किताब का सार भी निम्न शब्दों में बताया – ''भालू का बच्चा बेर–बेर पर चढ़त, गिर पड़त भदाक से। बेर–बेर लुढ़क जात रहा। चिड़िया उइके लिए फूल ले लाई, तबहूं उसका रोना नहीं थमा। बंदर केला लाईस, गिलहरी अखरोट लाईस। तबहूं न थमा रोना। तोता सने मधुमक्खी कहिस पलाश का पत्ता तूड़ लाव। चींटी दोना बनाईके दिहिस, सींक लगाईके। मधुमक्खी शहद लाईस पेड़ पर से। चिड़िया का दिहिस। तौ वव चाखै लाग, हंसय लाग भालू का बच्चा।'' सोनू ने इस तरह किताब का सार पूरी तरह बताया उसके इस तरह बताने में उसका पूर्ण आत्मविश्वास झलक रहा था।

– वीरेन्द्र को 'महागिरी' नामक पुस्तक पढ़ने को दी गई। वीरेन्द्र बड़ी सहजता से उसे पढ़ रहा था। लेकिन पढ़ने के दौरान आने वाले कुछ शब्दों जैसे व्यापारी, निकम्मा, ध्वज, ब्याह, गुड्डा आदि को पढ़ने में काफी दिक्कत आ रही थी। इस किताब के अंतर्गत जब उसे आसान पाठ्य मिलता तो उसके पढ़ने की रफ्तार एकाएक बढ़ जाती। लेकिन कठिन शब्दावली पड़ने पर फिर रफ्तार धीमी हो जाती। 'छूरा' शब्द को पहले वह ठीक से नहीं पढ़ पाया लेकिन फिर चित्र देखकर उसने शब्द का अनुमान लगाया। इसी तरह 'ध्वज' शब्द के अर्थ का अंदाजा भी उसने चित्र देखकर लगाया और उससे पूछने पर उसने उसका अर्थ 'झंडा' बताया। 'ब्याह' शब्द को वह नहीं पढ़ पाया तो उसने पूछ लिया। पढ़ने के दौरान 'गुड्डा' को 'गड्ढा', 'घुटनों' को 'घुड़नो' तथा 'धीरे से' को 'पीछे से' पढ़ा। किताब के अंत में बातचीत करने पर उसने 'उत्सव' का अर्थ 'पूजा' बताया। 'विशाल' का अर्थ 'समझदार' बताया। पढ़ने के उपरांत उसने किताब का सारांश भी बताया। किताब की कहानी को समझने में वह कामयाब रहा।

– कक्षा 2 की कंचनलता को पढ़ने के लिए चित्रात्मक पुस्तक 'हाथी और भौंरे की दोस्ती' पढ़ने को दी गई। कंचनलता इस किताब को बड़ी सहजता से पढ़ रही थी। पढ़ने के दौरान उसने एक जगह 'गए' शब्द को 'आए' पढ़ा और फिर बाद में अपने आप ठीक भी किया। इसी तरह 'मस्त' को 'रहता' पढ़ा। 'बेखबर' को भी पढ़ने में दिक्कत आई। यह उसके लिए एक नया शब्द था। 'फेंक' शब्द को नहीं पढ़ पा रही थी। तो उसने तुरंत पूछ लिया। पूरी कहानी को वह समझ गई और पूछने पर उसने संक्षिप्त रूप से उसे बताया भी। 'झुंड' शब्द का अर्थ उसने अपनी स्थानीय बोली में 'शैल' बताया।

बच्चों का पढ़ने–लिखने का कार्यक्रम – सुझाव

- बच्चों के पढ़ने के दौरान शिक्षक प्रत्येक बच्चे के त्रुटियों के पैटर्न पर ध्यान दे कि कौन बच्चा किस प्रकार की त्रुटियां करता है और शिक्षक उस बच्चे की त्रुटियों पर ध्यान देते हुए सुधार कार्य करवाए।
- शिक्षक के लिए आवश्यक है कि जिन बच्चों को पढ़ने के प्रति अभी आत्मविश्वास नहीं बन पाया है उन पर वह विशेष रूप से ध्यान दें और उन्हें स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

- पढ़ने के अवलोकनों में यह भी देखा गया कि कुछ बच्चे उंगुली रखकर, बोल–बोल कर पढ़ते हैं। इससे उनके पढ़ने में आत्मविश्वास की कमी दिखाई पड़ती है। शिक्षक उन्हें मन ही मन पढ़ने की सलाह देकर उनके पढ़े हुए पर चर्चा करें तथा कठिनाईयों का निवारण करें। जिससे बच्चों में स्वतंत्र रूप से पढ़ने का आत्मविश्वास पैदा हो।
- बच्चों के पढ़ने–लिखने के कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए आवश्यकता है कि बच्चों की लिखी हुई सामग्री पर शिक्षक अच्छी तरह से तवज्जो दें और उसको बच्चों से पढ़वा कर उसकी त्रुटियों को सुधारने में बच्चों की मदद करें। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि उनके लिखे हुए शब्दों में वर्तनी सुधार, व्याकरण की त्रुटियों में सुधार, अस्पष्ट वाक्यों में सुधार, वाक्यों में दोहराव, लिंकिंग शब्दों में कांट–छांट की जाए और उस पर बच्चों से नियमित रूप से बातचीत कर सुधार कार्य करवाए जाएं।
- बच्चों के लिखने के लिए दिए जाने वाले कार्यों की पूर्व योजना बनाना जरूरी है ताकि बच्चों को स्पष्ट हो कि उन्हें इस कार्य में क्या करना है? इसके लिए बच्चों को लिखने के संकेत दिए जाएं। केवल इतने से काम नहीं चलेगा कि किसान, मेला, गांव पर लिखो आदि। उन्हें यह बताया जाए कि किसान/मेले/गांव के बारे में किन–किन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर लिखना है?
- शिक्षकों के लिए यह भी आवश्यक है कि वे यह भी समझें कि बच्चों के पढ़ने–लिखने में क्या सुधार हो रहा है? खासकर उनकी अभिव्यक्ति को ध्यान में रखकर। इसके लिए आवश्यकता है कि इस कार्यक्रम से जुड़े व्यक्ति इस पर अपनी समझ बनाएं तथा बच्चों के पढ़ने–लिखने के सुधार को समझने के लिए फार्मेट तैयार करें।
- बच्चों के पढ़ने–लिखने के दौरान उन्हें विभिन्न तरह के 'फार्म' दिए जाएं। केवल एक ही तरह के फार्मेट पर आश्रित न रहा जाए। जैसे – कहानी, निबंध, रिपोर्ट, पत्र, कविता, स्लोगन आदि को भी पढ़ने–लिखने के मौके प्रदान किए जाएं। इसके अलावा बच्चों के लिखने को कक्षा की अन्य विषयों से भी जोड़ा जा सकता है।
- कक्षा के अवलोकनों में यह भी देखा गया कि कुछ बच्चे विद्यालय में काफी अनुपस्थित रहे हैं। इस कारण वे पढ़ने–लिखने सीखने में भी पिछड़े हुए हैं। उन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है तथा उनके अभिभावकों से भी बातचीत करने की आवश्यकता है।
- बच्चों के लिखने में सुधार को ध्यान में रखकर यह भी किया जा सकता है कि शिक्षक चाहे तो प्रति सप्ताह बच्चों से दो–तीन बार ही लिखवाएं। लेकिन उसके सुधार कार्य पर ज्यादा ध्यान दें।
- बच्चों के हस्तलेख में सुधार हेतु बच्चों को लाईनदार कागज उपलब्ध करवाने की जरूरत है। या उपलब्ध कराए गए कागज पर बच्चों से लाईन भी डलवाई जा सकती है। जिससे बच्चे सुव्यवस्थित तरीके से लिख सकें।
- बच्चों के पढ़ने–लिखने के कार्यक्रम को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए आवश्यक है कि इस कार्यक्रम के संचालक व शिक्षकों के बीच नियमित रूप से अनुभवों का आदान प्रदान व संवाद जारी रहे। तभी इस प्रकार के कार्यक्रमों को और प्रभावी ढंग से चलाया जा सकेगा।

संदर्भ पुस्तकें

- *बच्चे की भाषा और अध्यापक, (1996) कृष्ण कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली।*
- *'The Reading Book' (1991) Centre for Language in Primary Education, London*
- *'Reading for nonsense', (1978), Frank Smith Teachers college press, New York,*
- *'Issues of primary education', Ed.Cil, New Delhi (Issue - January-March, 2001)*
- *What's whole in whole language?, (1986) Heinemann educational books, ports mouth, New Hampshire (USA)*
- *शैक्षिक ज्ञान और वर्चस्व, (1998) कृष्ण कुमार, ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली।*